क्या विवाह के समय माता सीता की आयु 6 वर्ष व श्री राम की आयु 13 वर्ष थी ?

जानिए इस झूठे दावे की हकीकत

श्री सीताराम विवाह पर फैलाये जा रहे झूठ का खंडन

Part - 1

@sanatani_tells

वाल्मीकि रामायण में कही भी स्पष्ट रूप से (Explicitly) यह नहीं बताया गया है, की श्री राम और माता सीता की विवाह के समय उम्र क्या थी? तो फिर सवाल उठता है की, यह 6 साल वाली बात आती कहा से है, इसका जवाब है - रामायण के अरण्य काण्ड के सर्ग 47 के श्लोक संख्या 3 से 12, जहा माता सीता, रावण को अपना परिचय देते हुए कहती है की विवाह पश्चात् वह 12 वर्ष तक श्री राम के साथ अयोध्या रही, और जब श्री राम को जब वनवास मिला तो श्री राम की उम्र 25 वर्ष और माता सीता की उम्र 18 वर्ष थी। और यदि इसे हम तथागत ले तो इसके अनुसार, माता सीता विवाह के समय 6 वर्ष और श्री राम 13 वर्ष के थे

उषित्वा द्वादश समा इक्ष्वाकूणां निवेशने ।
भुञ्जाना मानुषान्भोगान्सर्वकामसमृद्धिनी ॥ ४ ॥

विवाह के अनन्तर मैं ने बारह वर्ष तक इक्ष्वाकुवंशियों की राजधानी अयोध्या में रह कर, मनुष्यदुर्लभ भोग भोगे और अपने सब मनोरथों को पूर्ण किया ॥ ४ ॥

और मेरी जन्मकाल से गणना करके १८ वर्ष की थी, श्रीरामचन्द्र जो लोक में प्रसिद्ध हैं और जो सुशील, सत्यवादी, पवित्र, बड़े नेत्रों और लंबी बाहुओं वाले हैं तथा सब प्राणियों के हितकारी हैं—उनका

पर इन श्लोको के साथ दो समस्या है।

1. हमें ये नहीं पता चलता की आयु की गणना किस आधार (जन्म या फिर उपनयन संस्कार के बाद से, जिसे हिन्दुओ का दूसरा जन्म माना जाता है) पर की गयी है, क्योंकि रामायण के दूसरे श्लोको में जन्म की गणना उपनयन सस्कार के आधार पर भी की गयी है। जैसे –

अयोध्याकाण्ड सर्ग 20 श्लोक 45

दश सप्त च वर्षाणि जातस्य तव राघव।
अतीतानि प्रकाङ्क्षन्त्या मया दुःखपरिक्षयम् ॥ ४५ ॥

'रघुनन्दन ! तुम्हारे उपनयनरूप द्वितीय जन्म लिये सत्रह वर्ष बीत गये (अर्थात् तुम अब सत्ताईस वर्षके हो गये)। अबतक मैं यही आशा लगाये चली आ रही थी कि अब मेरा दुःख दूर हो जायगा ॥ ४५ ॥

२. माता सीता के विवाह पश्चात 12 वर्ष अयोध्या में रुकने का वर्णन रामायण के सिर्फ दक्षिण version के श्लोको में मिलता है। रामायण के criticle edition, और बंगाल संस्करण में नहीं, इसलिए रामायण के क्रिटिकल एडिशन और बंगाल संस्करण द्वारा इन श्लोको का खंडन पहले ही हो जाता है।

उषित्वा द्वादश समा इक्ष्वाकूणां निवेशने ।
भुञ्जाना मानुषान् भोगान् सर्वकामसमृद्धिनी ॥ ४ ॥

'विवाहके बाद बारह वर्षोंतक इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथके महलमें रहकर मैंने अपने पतिके साथ सभी मानवोचित भोग भोगे हैं। मैं वहाँ सदा मनोवाञ्छित सुख-सुविधाओंसे सम्पन्न रही हूँ ॥ ४ ॥

तत्र त्रयोदशे वर्षे राजामन्त्रयत प्रभुः ।
अभिषेचयितुं रामं समेतो राजमन्त्रिभिः ॥ ५ ॥

'तेरहवें वर्षके प्रारम्भमें सामर्थ्यशाली महाराज दशरथने राजमन्त्रियोंसे मिलकर सलाह की और श्रीरामचन्द्रजीका युवराजपदपर अभिषेक करनेका निश्चय किया ॥ ५ ॥

संवत्सरं चाध्युषिता राघवस्य निवेशने ।
भुञ्जाना मानुषान्भोगान्सर्वकामसमृद्धिनी ॥ ४

अरण्य काण्ड सर्ग 45 (critical edition)

ततः संवत्सरादूर्ध्वं सममन्यत मे पतिं ।
अभिषेचयितुं राजा संमन्त्र्य सचिवैः सह ॥४॥

अरण्यकाण्ड सर्ग 53 (बंगाल संस्करण)

समा द्वादश तत्राहं राघवस्य निवेशने ।
भुञ्जाना मानुषान् भोगान् सर्वकामसमृद्धिनी ॥ १७ ॥

'अयोध्यामें श्रीरघुनाथजीके अन्तःपुरमें बारह वर्षोंतक मैं सब प्रकारके मानवीय भोग भोगती रही और मेरी सारी अभिलाषाएँ सदैव पूर्ण होती रहीं ॥ १७ ॥

सुंदरकांड सर्ग 33

उषिता वर्षमेवैकं राघवस्य निवेशने ।
भुञ्जाना मानुषान् भोगान् सर्वभोगसमृद्धिनी ॥ ११

सुंदरकांड सर्ग 31 (बंगाल संस्करण)

यदि हम इन श्लोको से देखे तो हमें पता चलता है की श्री सीताराम विवाह के पश्चात सिर्फ १-२ वर्ष ही अयोध्या रहे और बाद में वो वन को चले जाते है।

यह बात रामायण के ही इस श्लोक द्वारा स्पष्ट हो जाती है जब माता कौशल्या वनवास जाते समय श्री राम के बारे कहती है।

अयोध्याकाण्ड सर्ग 12 श्लोक 84

वेदैश्च ब्रह्मचर्यैश्च गुरुभिश्चोपकर्शितः ।
भोगकाले महत्कृच्छ्रं पुनरेव प्रपत्स्यते ॥ ८४ ॥

'हाय ! अबतक तो श्रीराम वेदोंका अध्ययन करने, ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करने तथा अनेकानेक गुरुजनोंकी सेवामें संलग्न रहनेके कारण दुबले होते चले आये हैं। अब जब इनके लिये सुखभोगका समय आया है, तब ये वनमें जाकर महान् कष्टमें पड़ेंगे ॥ ८४ ॥

यदि श्री राम 12 वर्ष तक अयोध्या में रहते तो उनकी माता ये ना कहती की, मेरे बेटे का सुख भोगने का समय जब आया तो वह वन को जा रहा है, दूसरा यह की भरत और शत्रुघ्न विवाह के तुरंत पश्चात ही अपने ननिहाल चले गए थे। और वो श्री राम के वनवास जाने के पश्चात वहा से लोटे, और उनका 12 साल ननिहाल में रुकना अतार्किक या थोड़ा अजीब है, खासकर तब जब 14 वर्ष का वनवास भी किसी बड़ी घटना के तोर पर अभिव्यक्त हुआ हो।

यदि हम ये कहते है की किसी संस्करण में लिखे श्लोक परिक्षिप्त है या उनमे बदलाव किये गए है, उनका कोई अंश गलत है, या आपकी भाषा में कहे daif है, तो उसका हमें कारण देना होगा। इसलिए अब आगे हम देखेंगे की रामायण के दूसरे संस्करण के श्लोक ज्यादा सही क्यों है। और हम रामायण के दक्षिण संस्करण द्वारा ही इस तथ्य को सत्यापित करने की कोशिश करेंगे।

Part - 1
क्या विवाह के समय माता सीता एक मासूम सी बच्ची थी ?

श्री वाल्मीकि रामायण में महाराज दशरथ माता सीता का परिचय देते हुए कहते है की भूमि से प्रकट हुई मेरी वह कन्या जब बढ़कर "सयानी" हुई, तब उन्होंने उनका विवाह करने का निश्चय किया, और इस बात को स्वयं माता सीता अयोध्याकाण्ड में स्पष्ट कर देती है जब वो माता अनुसूया से अपना परिचय देते हुए कहती है की, "मुझे विवाह करने योग्य उम्र में पहुंची देख मेरे पिता को मेरे विवाह की चिंता सताने लगी."

बालकाण्ड सर्ग 66 श्लोक 13-15

क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता ।
भूतलादुत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा ॥ १४ ॥

'एक दिन मैं यज्ञके लिये भूमिशोधन करते समय खेतमें हल चला रहा था। उसी समय हलके अग्रभागसे जोती गयी भूमि (हराई या सीता) से एक कन्या प्रकट हुई। सीता (हलद्वारा खींची गयी रेखा) से उत्पन्न होनेके कारण उसका नाम सीता रखा गया। पृथ्वीसे प्रकट हुई वह मेरी कन्या क्रमशः बढ़कर सयानी हुई ॥ १३-१४ ॥

श्री वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड सर्ग 118 के श्लोक 34

पतिसंयोगसुलभं वयो दृष्ट्वा तु मे पिता ।
चिन्तामभ्यगमद्दीनो वित्तनाशादिवाधनः ॥ ३४ ॥

मुझे विवाह करने के योग्य उम्र में पहुँची देख, पिता जी उसी प्रकार चिन्ताग्रस्त और विकल हुए, जिस प्रकार धन के नाश से निर्धन मनुष्य विकल और चिन्ताग्रस्त होता है ॥ ३४ ॥

जब श्री राम, शिव धनुष को भंग कर देते है, और उनका विवाह माता सीता के साथ तय हो जाता है, तब महाराज दशरथ, माता सीता की तुलना एक देवकन्या से करते है, ना की एक छोटी बच्ची से । यहाँ महाराज दशरथ ने खुद अपनी बेटी को देवकन्या के समान बताया है, देवकन्या यानी वो युवती स्त्री जो स्वर्ग में रहती है।

बालकाण्ड सर्ग 71 श्लोक 21-22

'आपका भला हो ! मैं सीताको श्रीरामके लिये और ऊर्मिलाको लक्ष्मणके लिये समर्पित करता हूँ। पराक्रम ही जिसको पानेका शुल्क (शर्त) था, उस देवकन्याके समान सुन्दरी अपनी प्रथम पुत्री सीताको श्रीरामके लिये तथा दूसरी पुत्री ऊर्मिलाको लक्ष्मणके लिये दे रहा हूँ। मैं इस बातको तीन बार दुहराता हूँ, इसमें संशय नहीं है। मुनि-

English meaning of dev-kanyaa

Hide. Noun, Feminine. **daughter of god, Goddess**. **very beautiful woman**.

https://www.rekhtadictionary.com › meaning-of-dev-kany...

Meaning of dev-kanya in English - Rekhta Dictionary

श्री रामचरित मानस में भी विवाह के समय माता सीता के रूप का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने उन्हें युवती स्त्री बताया है।

सीताजीके वर्णनमें उन्हीं उपमाओंको देकर कौन कुकवि कहलाये और अपयशका भागी बने (अर्थात् सीताजीके लिये उन उपमाओंका प्रयोग करना सुकविके पदसे च्युत होना और अपकीर्ति मोल लेना है, कोई भी सुकवि ऐसी नादानी एवं अनुचित कार्य नहीं करेगा।) यदि किसी स्त्रीके साथ सीताजीकी तुलना की जाय तो जगत्‌में ऐसी सुन्दर युवती है ही कहाँ [जिसकी उपमा उन्हें दी जाय]॥ २॥

अब यदि वो बच्ची होती तो उनकी तुलना एक बच्ची से की जाती, न की किसी युवती स्त्री या स्वर्ग में रहने वाली महिला से।

रामचरित मानस में वर्णन मिलता है की माता सीता ने माता गिरिजा की आराधना के बाद स्वयं के योग्य सुन्दर वर माँगा, और अगर वो एक बच्ची होती तो अपने लिए खिलोने मांगती ना की सुन्दर वर

साथमें सब सुन्दरी और सयानी सखियाँ हैं, जो मनोहर वाणीसे गीत गा रही हैं। सरोवरके पास गिरिजाजीका मन्दिर सुशोभित है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता; देखकर मन मोहित हो जाता है॥ २॥

सखियोंसहित सरोवरमें स्नान करके सीताजी प्रसन्न मनसे गिरिजाजीके मन्दिरमें गयीं। उन्होंने बड़े प्रेमसे पूजा की और अपने योग्य सुन्दर वर माँगा॥ ३॥

एक दोहे में माता सीता की सहेलिया, श्री राम को माता सीता के योग्य वर बताते हुए कहती है की

कोई कहती है—यदि विधाता भले हैं और सुना जाता है कि वे सबको उचित फल देते हैं, तो जानकीजीको यही वर मिलेगा। हे सखी! इसमें सन्देह नहीं है॥ ३॥

श्रीरामचन्द्रजीकी छबि देखकर कोई एक (दूसरी सखी) कहने लगी—यह वर जानकीके योग्य है। हे सखी! यदि कहीं राजा इन्हें देख ले, तो प्रतिज्ञा

इन सब रेफ़्रेन्स से हमें यही पता चलता है की माता सीता विवाह के समय एक युवती यानी नवयौवना स्त्री थी जो विवाह योग्य हो गयी थी।

Part – 2 : क्या विवाह के समय श्री राम 13 वर्ष के थे

यह जानने से पहले की विवाह के समय श्री राम की आयु क्या थी, हमें दो महत्वपूर्ण चीजों को समझना होगा।

1. **उपनयन संस्कार - उपनयन संस्कार हिन्दुओ के जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले कुल 16 संस्कार में से एक है, जिसमे बालक यज्ञोपवीत धारण करता है, और इसके बाद ही उसे शिक्षा और वेदो को पढ़ने का अधिकार मिलता है। इस संस्कार को हिन्दुओ का दूसरा जन्म माना जाता है, इसलिए हिन्दुओ को द्विज यानी दूसरा जन्म लेने वाला भी कहते है, अलग अलग वर्णो के लिए इस संस्कार की आयु अलग अलग है, जिसमे क्षत्रियों का उपनयन संस्कार 11 वर्ष की आयु में होता है।**

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् ।गर्भदिकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः । Manusmriti 2/36

2. ब्रह्मचर्य आश्रम –

सनातन धर्म में मनुष्य की आयु को 100 साल मानकर ड्यूटी या कर्तव्य के हिसाब से उसे चार आश्रमों में विभक्त किया गया है।, जिसमे जन्म से जो शुरुवाती 25 साल होते है, उसे ब्रह्मचर्य आश्रम कहा जाता है, इसमें बालक यज्ञोपवीत धारण करके वेदों की शिक्षा प्राप्त करता है।

Āśrama or stage	Age (years)[9]	Rituals of transition
Brahmacharya (student life)	Till 25	Upanayana at entry.[10][11] Samavartana at exit.[12]

https://en.wikipedia.org › wiki › Āśrama_(stage)

Āśrama (stage) - Wikipedia

महाभारत में भीष्म पितामह आश्रमों के कर्तव्यों का वर्णन करते हुए कहते है की

युधिष्ठिर ! अब तुम चारों आश्रमोंके नाम और कर्म सुनो, ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास—ये चार आश्रम हैं। इनमें गार्हस्थ्यकी महिमा विशेष है। ब्रह्मचर्यमें जटाधारण और उपनयन-संस्कारद्वारा द्विजत्व प्राप्त करके वेदाध्ययन करे, फिर गार्हस्थ्यमे अग्न्याधानादि कर्म करते हुए उनके द्वारा तीनों ऋणोंसे मुक्त होकर इन्द्रियोंका संयम कर स्त्रीके सहित अथवा उसे छोड़कर वानप्रस्थ आश्रममें प्रवेश करे। इस आश्रममें आरण्यक शास्त्रोंका अध्ययन कर वनवासियोंके धर्म सीखे और फिर ब्रह्मचर्यपूर्वक संन्यास लेकर इन्द्रिय-सम्बन्धी भोगोंसे विरक्त हो जाय। महाराज ! मोक्षकामी ब्राह्मणके लिये ब्रह्मचर्यका पालन करनेके बाद ही संन्यासाश्रममें प्रवेश करनेका अधिकार कहा है।

अब यहाँ 2 प्रश्न है ? क्या श्री राम उपनयन संस्कार हुआ था और क्या उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया था, तो इन दोनों ही प्रश्नो के जवाब है, हा

वाल्मीकि रामायण, महाभारत में वर्णित रामायण व रामचरित मानस, तीनो से ही हमें श्री राम के वेदो और अस्त्र विद्या में पारंगत होने का वर्णन मिलता है, और वेदो की शिक्षा उपनयन संस्कार के बाद ही दी जाती है, और वाल्मीकि रामायण, महाभारत में वर्णित रामायण व रामचरित मानस, तीनो में ही, श्री राम के उपनयन संस्कार, विधिवत ब्रह्मचर्य आश्रम और उनके गुरुकुल में जाने का वर्णन मिलता है।

बालकाण्ड सर्ग 18 श्लोक 24-25

तेषां जन्मक्रियादीनि सर्वकर्माण्यकारयत् ।
तेषां केतुरिव ज्येष्ठो रामो रतिकरः पितुः ॥ २४ ॥

महर्षि वसिष्ठने समय-समयपर राजासे उन बालकोंके जातकर्म आदि सभी संस्कार करवाये थे। उन सबमें श्रीरामचन्द्रजी ज्येष्ठ होनेके साथ ही अपने कुलकी कीर्ति-ध्वजाको फहरानेवाली पताकाके समान थे। वे अपने पिताकी प्रसन्नताको बढ़ानेवाले थे ॥ २४ ॥

बभूव भूयो भूतानां स्वयम्भूरिव सम्मतः ।
सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे लोकहिते रताः ॥ २५ ॥

सभी भूतोंके लिये वे स्वयम्भू ब्रह्माजीके समान विशेष प्रिय थे। राजाके सभी पुत्र वेदोंके विद्वान् और शूरवीर थे। सब-के-सब लोकहितकारी कार्योंमें संलग्न रहते थे ॥ २५ ॥

अयोध्याकाण्ड सर्ग 12 श्लोक 84

वेदैश्च ब्रह्मचर्यैश्च गुरुभिश्चोपकर्शितः।
भोगकाले महत्कृच्छ्रं पुनरेव प्रपत्स्यते ॥ ८४ ॥

'हाय! अबतक तो श्रीराम वेदोंका अध्ययन करने, ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करने तथा अनेकानेक गुरुजनोंकी सेवा-में संलग्न रहनेके कारण दुबले होते चले आये हैं। अब जब इनके लिये सुखभोगका समय आया है, तब ये वनमें जाकर महान् कष्टमें पड़ेंगे ॥ ८४ ॥

गोस्वामी तुसलीदास जी कहते है,

ज्यों ही सब भाई कुमारावस्थाके हुए, त्यों ही गुरु, पिता और माताने उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया। श्रीरघुनाथजी [भाइयोंसहित] गुरुके घरमें विद्या पढ़ने गये और थोड़े ही समयमें उनको सब विद्याएँ आ गयीं ॥ २ ॥

कमरमें तरकस और पीताम्बर बाँधे हैं। [दाहिने] हाथोंमें बाण और बायें सुन्दर कंधोंपर धनुष तथा पीले यज्ञोपवीत (जनेऊ) सुशोभित हैं। नखसे लेकर शिखातक सब अंग सुन्दर हैं, उनपर महान् शोभा छायी हुई है ॥ १ ॥

जैसा की हमने Part - 2 में देखा की श्री राम उपनयन संस्कार के बाद गुरुकुल शिक्षा ग्रहण करने चले गए थे, और उन्होंने विधिवत ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन भी किया था, जिससे ये सिद्ध होता की श्री राम का विवाह 25 वर्ष की आयु के बाद ही हुआ था। यह बात वाल्मीकि रामायण द्वारा और भी अच्छे से स्पष्ट हो जाती है, जब महाराज जनक अपने भाई को चारो राजकुमारों का परिचय देते हुए उन चारो राजकुमारों को यौवन यानी जवानी से भरपूर बताते है

पुत्रा दशरथस्येमे रूपयौवनशालिनः।
लोकपालसमाः सर्वे देवतुल्यपराक्रमाः ॥ ७ ॥

'राजा दशरथके ये सभी पुत्र रूप और यौवनसे सुशोभित, लोकपालोंके समान तेजस्वी तथा देवताओंके तुल्य पराक्रमी हैं॥

जब महाराज जनक, महर्षि विश्वामित्र से श्री राम का परिचय पूछते है तब वे उन्हें युवावस्था में प्रवेश करने वाला सुदृढ़ डील डोल वाला, यौवन यानी जवानी से भरपूर और देवताओं और अश्विन कुमारो के समान बताते है

बालकाण्ड सर्ग 50 श्लोक 17-21

'महामुने! आपका कल्याण हो। देवताके समान पराक्रमी और सुन्दर आयुध धारण करनेवाले ये दोनों वीर राजकुमार जो हाथीके समान मन्दगतिसे चलते हैं, सिंह और साँड़के समान जान पड़ते हैं, प्रफुल्ल कमलदलके समान सुशोभित हैं, तलवार, तरकस और धनुष धारण किये हुए हैं, अपने मनोहर रूपसे अश्विनीकुमारोंको भी लज्जित कर रहे हैं, जिन्होंने अभी-अभी यौवनावस्थामें प्रवेश किया है तथा जो स्वेच्छानुसार देवलोकसे उतरकर पृथ्वीपर आये हुए दो देवताओंके समान जान पड़ते हैं, किसके पुत्र हैं? और यहाँ कैसे, किसलिये अथवा किस उद्देश्यसे पैदल ही पधारे हैं? जैसे चन्द्रमा और

सबसे महत्वपूर्ण बात महाराज जनक ने श्री राम की अवस्था को यौवना अवस्था में प्रवेश करने वाला बताया है, और शुश्रुत के अनुसार यौवना अवस्था का आरम्भ 25 वर्ष की उम्र से होता है,

"चतस्त्रो अवस्था : शरीरस्य, वृद्धि :, यौवनम्, संपूर्णता, किंचित परिहाणि : चेति । आषोडशात् वृद्धि :, आपञ्चविंशते : यौवनम्, आचत्वारिंशत : संपूर्णता, तत : किञ्चित परिहाणि : चेति ।" [सुश्रुत सूत्रस्थान ३५ । ३५ ।।] = शरीर की चार अवस्थाएं हैं, सोलहवें वर्ष से चौबीस तक वृद्धि = बढ़ोतरी की अवस्था, पच्चीसवें वर्ष से यौवन का प्रारम्भ होता है, और चालीसवें में यौवन की परिपक्वता होती है । उसके पश्चात शरीर की धातुओं में कुछ-कुछ क्षीणता आने लगती है ।

अब यदि श्री राम एक बच्चे होते तो उनका वर्णन एक बच्चे के तोर पर होना चाहिए था ना की किसी नौजवान पुरुष के तोर पर इन सब संदर्भो से ये बात स्पष्ट हो जाती है की श्री राम का विवाह, 25 वर्ष की आयु के बाद ही हुआ था। और जब उनका विवाह हुआ था तब वो एक नौजवान पुरुष थे ना की एक बच्चे.

जिन श्लोकों से ये सत्यापित करने की कोशिश की जा रही है की श्री राम का विवाह 13 वर्ष की आयु में हुआ, उन्हें रामायण के दूसरे संस्करणों द्वारा ख़ारिज कीया जा सकता है, और ये बात यही पर समाप्त हो जाती है। पर मुझे लगता है की ये बताना जरुरी है की, किसी चीज को गलत क्यों कहा जा रहा है। एक और तथ्य पर हमें ध्यान देना चाहिए जैसा की हमने जाना की हिन्दुओ को द्विज यानी दूसरा जन्म लेने वाला भी कहा जाता है, इसलिए उम्र की गणना दूसरे जन्म के आधार पर भी की जाती है, रामायण में बहुत सी जगह उम्र की गणना दूसरे जन्म के आधार पर की गयी है, जब महर्षि विश्वामित्र अपने यज्ञ की राक्षसों से रक्षा करवाने के लिए श्री राम को लेने आते है तब महाराज दशरथ कहते है की उनका पुत्र अभी 15 साल का ही है, और जिसके बाद श्री राम उनके साथ जनकपुरी जाते है और माता सीता से विवाह करते है और जब श्री राम वन को जाते है तो उनकी माता उनकी आयु 17 वर्ष बताती है जिससे भी श्री राम के अयोध्या में सिर्फ दो वर्ष रुकने और फिर वनवास चले जाने की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष

श्री राम का विवाह कम उम्र में नहीं हुआ था, और ना ही माता सीता और श्री राम विवाह के समय बच्चे थे, जिन श्लोको से ये सत्यापित करने की कोशिश की जा रही है की श्री राम का विवाह बहुत कम उम्र में हो गया तो यह श्लोक सिर्फ रामायण के दक्षिण संस्करण में ही प्राप्त होते है और उसका भी खंडन स्वयं दक्षिण संस्करण के ही अन्य श्लोको और रामायण के बंगाल संस्करण और क्रिटिकल edition द्वारा हो जाता है।

जय सीताराम